ISSN : 2583-2948

संपादकीय

साल दर साल बीतता है फिर नया साल, नए सवाल के साथ खड़ा हो जाता है। प्रति वर्ष 31 दिसंबर को लिया गया संकल्प (Resolution) व्यक्ति के जीवन में कितना बदलाव लाता है यह सुनिश्चित कर पाना तनिक मुश्किल है। उसके कई कारण हो सकते हैं यथा – आलस्य, दूसरों के कार्य के प्रति अति हस्तक्षेप या रुचि रखना, अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के चलते, लिए गए संकल्प पर ध्यान न देना या फिर संकीर्ण मानसिकता का रोगी होना। विवेच्य वजहों में से थोड़ा बहुत समझौता किया जा सकता है परंतु संकीर्ण मानसिकता की प्रवृत्ति न केवल व्यक्ति के विकास व कार्य में रोड़े डालती है अपितु भारत के उच्च परिबोध को भी बाधित करती है। ऐसी मनोवृत्ति नकारात्मक व आसुरी प्रवृत्तियों को भड़काने में घी का काम करती हैं। यह भी सगर्व स्वीकार्य है कि संकीर्ण दृष्टिकोण भारतीय नहीं है। भारत के गौरवशाली परंपरा का सबसे बड़ा और अनुकरणीय गुण यह है कि हर उस गुणवान पक्ष को समर्थन मिले जो मनुष्य को गुण सम्पन्न करे। भारतीय दृष्टि उत्थान और विकास का प्रदर्शक है परंतु उसे मनुष्यता की विशेष चिंता है। यह चिंता है मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने की, देश की संपदा को बचाए रखने की। जब भी बात आती है हमारे समाज से मूल्यों के क्षरण की तो सर्वाधिक आरोप लगाया जाता है पाश्चात्यानुकरण पर। हमारी युवा पीढ़ी उनकी सभ्यता को ही आत्मसता कर रही है, अपनी पहचान से विलग होती जा रही है आदि – आदि। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि जिन्हें इस बात की चिंता है कि आज की युवा पीढ़ी के आचरण भ्रष्ट होने का कारण विदेशी सभ्यता है तो क्या उन्हें इसमें अपनी कमी दिखाई नहीं पड़ती ? संस्कार सदैव दो प्रकार से मानव में विकसित होते हैं पहला – माता – पिता द्वारा दिये गए वातावरण से और दूसरा अपने परिवेश का भुक्त भोगी होकर जब व्यक्ति स्वयं उसे निर्मित करता है। अब संदर्भ यह है कि अगर हमें लगता है कि देश और उसके लोग दिग्भ्रमित हो रहे हैं, पारंपरिकता पर आधुनिकता हावी होती जा रही है, सांस्कृतिक प्रदूषण फैलता ही जा रहा है तब ऐसी स्थिति में हमने अपने किस दायित्व का निर्वहन किया ? गलत को गलत कहने में और सत्य का पक्षधर बनने में यदि हमारा मन तनिक भी कोताही करता है या असमंजस की स्थिति में पड़ता है तो स्पष्ट है कि हम अंदर से मात्र खयाली पुलाव पकाने वाले ही हैं, दमदार विचारधारा के संवाहक और धाकड़ नहीं। आज आवश्यकता है कि परस्पर वैमनस्यता को भुलाकर देश हित में कुछ विशिष्ट कार्य किया जाये बिना किसी अपेक्षा के। अपनी अभिक्षमता को सही दिशा में अभिव्यक्त किया जाये, शैक्षिक योग्यता का सदुपयोग किया जाये।

अनुकर्ष के इस अंक में कुछ ऐसी ही विशिष्ट रचनाएँ इस बार संकलित हैं जो चिंतन को एक नया आयाम देने में कारगर हैं। सुधीर ओखदे जी का निबंध 'चिंतन - मानवीय प्रवृत्तियों का साक्षात्कार', लिंगम चिरंजीवी जी का आध्यात्मिक शोध परक लेख 'जगन्नाथ पुरी का विशेष संदर्भ', प्रवासी साहित्यकार, पद्मेश गुप्त जी का साक्षात्कार, डॉ वेद मित्र शुक्ल जी के गजल समेत सभी कवितायें और अन्य लेख एक विशिष्ट भाव को दर्शाती हैं जो समाज व साहित्य के हित में हैं। पत्रिका के इस अंक हेतु लेखकीय सहयोग देने के लिए सभी लेखकों और कवियों का आभार व्यक्त करती हूँ इस अपेक्षा के साथ कि निकट भविष्य में भी उनका सान्निध्य प्राप्त होगा। पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए पाठको के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

अनुपमा तिवारी

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी